राजनीतिक तरकस

RNI NO.: DELHIN/2016/70363

देश का सबसे तेज साप्ताहिक

राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार

मूल्य : ₹5

■ वर्ष : 01 ■ अंक : 11 ■ पृष्ठ : 08 ■ नई दिल्ली ■ बुधवार ■ 07 दिसम्बर, 2022 (07 दिसम्बर से 13 दिसम्बर 2022) ■ Website: www.rajneetiktarkas.in

दिल्ली में पूरा हुआ केजरीवाल का डबल इंजन सरकार का सपना

अभय तिवारी
(वरिष्ठ पत्रकार)

250 / 250	BJP 104	AAP 134	कांग्रेस 09

■ अब दिल्ली की छोटी सरकार में भी झाड़ू
■ विधानसभा चुनाव मुकाबले लचर प्रदर्शन के बावजूद मिली जीत
■ डेढ़ दशक बाद खत्म हुआ एमसीडी में भाजपा का राज

दिल्ली की छोटी सरकार कहे जाने वाले नगर निगम मे भी झाड़ू चल गई है। दिल्ली में डबल इंजन की सरकार का केजरीवाल का सपना पूरा होता दिख रहा है। एकतरफा मुकाबले के एग्जिट पोल के अनुमानों के ठीक उलट निगम की सत्ता पर डेढ़ दशक से काबिज भाजपा और दो बार से विधानसभा चुनाव में सभी का सूपड़ा साफ करने वाली आम आदमी पार्टी में कांटे की टक्कर देखने को मिला। आलम तो यह था कि पहले 2 घंटे तक दोनों ही दलों के नेताओं की सांसे अटकी हुई थी। मतगणना शुरू होने के 2 घंटे बाद तक दोनों ही दलों के मुख्यालयों में जश्न की तैयारी के बावजूद नेता बयानबाजी करने से बच रहे थे।

तीनों निगमों के एकीकरण और सीटों के परिसीमन के बाद पहली बार हो रहे 250 सदस्यीय दिल्ली नगर निगम चुनाव में आम आदमी पार्टी ने 134 सीटों के साथ पूर्ण बहुमत(126) से 8 सीटें ज्यादा हासिल कर लिया है। जबकि नगर निगम के सत्ता पर डेढ़ दशक से काबिज भाजपा को 104 सीटों से ही संतोष करना पड़ा है। वहीं दूसरी तरफ दिल्ली की सत्ता पर डेढ़ दशक तक एक क्षत्र राज करने वाली कांग्रेस नगर निगम चुनाव में दहाई का आंकड़ा भी नहीं पार कर पाई है। कांग्रेस को 9 सीटों से ही संतोष करना पड़ा है तो वही दूसरी तरफ तीन सीटें निर्दलीयों के खाते में गई हैं। आम आदमी पार्टी ने निगम चुनाव में 42.3 फीसदी मत हासिल किए तो वहीं भाजपा ने 39.2 फीसदी मत हासिल किए। 2020 के विधानसभा चुनाव के लिहाज से देखा जाए तो आम आदमी पार्टी कीमतों में लगभग 10 फीसदी की गिरावट आई जबकि भाजपा के मतों में लगभग5% फीसदी की बढत देखने को मिली। आम आदमी पार्टी के लिए खतरे की दूसरी बड़ी घंटी यह रही कि वह अपने सभी घोटाले के आरोपी मंत्रियों सत्येंद्र जैन उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और कैलाश गहलोत के इलाके में भाजपा से पिछड़ गई। तो वहीं दूसरी तरफ भाजपा के दो सांसदों उत्तर पूर्वी दिल्ली से मनोज तिवारी और पूर्वी दिल्ली से गौतम गंभीर को छोड़ दें तो सभी पांचों सांसदों के इलाकों में वह आम आदमी पार्टी से पिछड़ गई। कांग्रेस के लिए इन चुनाव में सबसे संतोष की बात यह रही कि आम आदमी पार्टी के दो बड़े मुस्लिम चेहरे इमरान हुसैन, और शोएब इकबाल को छोड़ दें तो अन्य मुस्लिम बहुल इलाकों में उसे अपना पुरानी वोट बैंक का भरोसा हासिल करने में उसे सफलता हासिल हो गई।

अन्ना आंदोलन के बाद साल 2012 में बनी आम आदमी पार्टी ने महज दस सालों में ही कई झंडे गाड़े हैं। अन्य क्षेत्रीय दलों को पिछाड़ते हुए 'आप' अब राष्ट्रीय पार्टी बनने की ओर तेजी से बढ़ रही है। पिछले दस सालों में केजरीवाल की पार्टी ने दिल्ली में तीन बार सरकार बनाई, जबकि पंजाब में इसी साल भारी बहुमत हासिल करते हुए सत्ता पर काबिज हो गई। वहीं, उत्तराखंड, गोवा, यूपी, गुजरात जैसे कई राज्यों में भी पार्टी ने चुनाव लड़कर ने कार्यकताओं का एक अच्छा खासा बेस बना लिया है। विभिन्न चुनावों में तेजी से सफलता हासिल करती आ आदमी पार्टी की अब नजर साल 2024 में होने वाले लोकसभा चुनावों पर होगी।

चुनाव के दौरान हुए आरोप-प्रत्यारोप को दरकिनार कर अब आगे काम करने की अपील करते हुए दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली की जनता ने 15 साल की भ्रष्ट भाजपा सरकार को हटा कर केजरीवाल के नेतृत्व में की सराकार बनाने के लिए बहुमत दिया है इसके लिए जनता का धन्यवाद। ये हमारे लिए बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।दिल्ली के लोगों ने मुझे दिल्ली की सफाई, भ्रष्टाचार को दूर करने, पार्क को ठीक करने के साथ कई सारी जिम्मेदारियां दी हैं। जिन्होंने हमें वोट दिया उनका बहुत-बहुत धन्यवाद लेकिन जिन्होंने हमें वोट नहीं दिया है वो तक आप सबसे पहले करूंगा। चुनाव खत्म हो गए हैं अब राजनीति खत्म हो गई अब मैं दिल्ली के विकास के लिए सबसे मिलकर के काम करने की अपेक्षा करता हूं। केजरीवाल ने केंद्र सरकार से दिल्ली के विकास में सहयोग की मांग करते हुए कहा कि दिल्ली को चलाने के लिए मुझे प्रधानमंत्री जी का आशीर्वाद चाहिए। मुझे उम्मीद है कि उनका और उनकी पार्टी का हमें दिल्ली के विकास में सहयोग मिलता रहेगा। मैं दिन रात मेहनत करके कोशिश करूंगा कि आपके इस भरोसे को कायम रखूं। मैं दिल्ली के लोगों के बहुत बधाई देना चाहता हूं। इतनी बड़ी और शानदार जीत के लिए, इतने बड़े बदलाव के लिए मैं दिल्ली के लोगों को बधाई देना चाहता हूं।

वहीं दिल्ली के डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया ने कहा कि दिल्ली एमसीडी में आम आदमी पार्टी पर भरोसा करने के दिल्ली की जनता का दिल से आभार। इससे पहले सिसोदिया ने ट्वीट किया था कि दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे नेगेटिव पार्टी को हराकर दिल्ली की जनता ने कट्टर ईमानदार और काम करने वाले केजरीवाले को जिताया है। हमारे लिए ये सिर्फ. जीत नहीं बड़ी ज़िम्मेदारी है।

राजनीतिक तरकस

देश का सबसे तेज साप्ताहिक

राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार

वर्ष : 01 , अंक : 11, नई दिल्ली, बुधवार, 07 दिसम्बर , 2022

अरविंद केजरीवाल के खिलाफ एंटी इनकंबेंसी: मानोज तिवारी

उत्तर पूर्वी दिल्ली के सांसद मनोज तिवारी ने यमुना विहार में मतदान किया। उन्होंने मतदान के बाद मीडिया से बात करते हुए मनोज तिवारी ने दावा किया कि एक बार फिर दिल्ली नगर निगम में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनेगी।

तिवारी का कहना है कि भाजपा के खिलाफ कोई एंटी इनकंबेंसी नहीं है। भाजपा ने दिल्ली नगर निगम में अच्छा काम किया है। साफ-सफाई भी अच्छी हुई है। केंद्र सरकार की तरफ से झुग्गी में रहने वालों को पक्का मकान दिया जा रहा है। उनका दावा है कि एंटी इनकंबेंसी अरविंद केजरीवाल सरकार के खिलाफ है और लोग उनके कामों से खुश नहीं है।

दिल्ली नगर निगम चुनाव को लेकर मतदान जारी है। वार्ड नंबर 94 गांधीनगर के बूथ संख्या 41 का वोटिंग मशीन तकरीबन 1 घंटे से खराब है। मशीन बदले जाने में काफी टाइम लग रहा है, जिसकी वजह से लोग नाराज हैं और कई लोग वापस लौट चुके हैं। लोगों का कहना है कि व्यवस्था ठीक नहीं है। मशीन अगर खराब हुआ है तो उसे तुरंत बदलना चाहिए, एक बार लौटने के बाद लोग दोबारा कम ही आ आते हैं।

बता दें, राजधानी दिल्ली में एमसीडी चुनाव के मद्देनजर आज बेहद महत्वपूर्ण दिन है। सभी 250 वार्ड के मद्देनजर आज मतदान की प्रक्रिया सुबह 8 बजे से जारी है, जो शाम 5 बजे तक होगी। चुनाव आयोग की जारी की गई ताजा जानकारी के मुताबिक, सुबह 10:30 बजे तक तकरीबन 9 फीसदी पोल दिल्ली के सभी 250 वार्ड में हुआ है। दिल्ली एमसीडी चुनाव में मतदान प्रक्रिया की शुरूआत थोड़ी धीमी गति से जरूर हुई है। इसके पीछे एक बड़ा कारण छुट्टी का दिन रविवार को बताया जा रहा है। साथ ही एक कारण यह भी है कि आज राजधानी दिल्ली में बड़ी संख्या में शादियों और दूसरे समारोह हैं, जिसके चलते मतदान की रफ्तार धीमी है। ऐसा माना जा रहा है कि दोपहर होते-होते और शाम तक दिल्ली में मतदान की रफ्तार बढ़ेगी और लोग बड़ी संख्या में वोट डालने के मद्देनजर मतदान केंद्रों का रुख करेंगे।

दिल्ली एमसीडी चुनाव : मतदाता सूची से नाम गायब होने से कई लोग हुए मायूस

दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) चुनाव के लिए खजूरी खास के एक मतदान केंद्र पर मतदाताओं की सूची उलट-पलट रहे 19 वर्षीय पुनीत कुमार रविवार को पहली बार मतदान करने के लिए उत्साहित थे, लेकिन सूची से अपना नाम नदारद मिलने पर वह निराश हो गए।

निराश और हताश पुनीत ने कहा, मैं यहां अपना वोट डालने आया था। मैंने देखा कि सूची में मेरा नाम नहीं है। अधिकारियों को कुछ अता पता नहीं है। मैं पिछले कुछ घंटों से खड़ा हूं लेकिन कोई मेरी मदद नहीं कर रहा है। उत्तर-पूर्वी दिल्ली और कई अन्य क्षेत्रों में लोगों ने शिकायत की कि मतदाता सूची में उनके नाम का उल्लेख नहीं किया गया था, जिस कारण वे मतदान नहीं कर सके।

कांग्रेस की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष अनिल कुमार उन लोगों में शामिल थे, जो सूची से अपना नाम गायब होने के कारण मतदान नहीं कर सके। अनिल कुमार ने पूर्वी दिल्ली के दल्लूपुरा में एक मतदान केंद्र पर कहा, मेरा नाम न तो मतदाता सूची में है और न ही हटाई गई सूची में। मेरी पत्नी ने मतदान किया है।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद मनोज तिवारी ने आरोप लगाया कि सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी (आप) के इशारे पर उनके उत्तर-पूर्वी दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र के मौजपुर और यमुना विहार इलाकों में सैकड़ों मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से काट दिए गए हैं।

मनोज तिवारी ने मौजपुर वार्ड में संवाददाताओं से कहा, मैंने इस संबंध में राज्य चुनाव आयुक्त से बात की है और उनके पास शिकायत दर्ज कराई है। अगर जरूरत पड़ी तो हम यहां चुनाव रद्द करने की मांग करेंगे। उन्होंने कहा कि वह संबंध में कानूनी विकल्प भी तलाश करेंगे।

नुसरा जहां (62) वोट डालने के लिए भजनपुरा के एक मतदान केंद्र पर पहुंचीं, लेकिन उन्हें बताया गया कि उनका नाम सूची में नहीं है। उन्होंने अधिकारियों से फिर से जांच करने का अनुरोध किया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। परेशान नुसरा जहां ने अधिकारियों पर घटिया काम करने का आरोप लगाते हुए अपना गुस्सा निकाला।

नुसरा जहां ने कहा, मैंने कई चुनावों में मतदान किया है और अब यह पहली बार है जब मुझे बताया गया है कि मेरा वोट यहां नहीं है। नुसरा जहां ने कहा, मुझे नहीं पता कि ऐसा क्यों किया गया है। मैंने उनसे स्पष्टीकरण मांगा, लेकिन वे स्पष्टीकरण नहीं दे सके। अब मुझे बिना वोट डाले वापस जाना होगा। यह अधिकारियों की गलती है।

कृष्णा नगर (पूर्वी दिल्ली) में रेयान अपनी पत्नी के साथ वोट डालने पहुंचे। लेकिन 30 वर्षीय रेयान मतदान नहीं कर सके, क्योंकि उनका नाम सूची में नहीं था। मतदान सुबह आठ बजे शुरू होकर शाम साढ़े पांच बजे समाप्त होना था।

इस चुनाव में मुख्य तौर पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा), आम आदमी पार्टी (आप) और कांग्रेस के बीच त्रिकोणीय मुकाबला है। दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) चुनाव में 1.45 करोड़ से अधिक मतदाता अपने मताधिकार का उपयोग करने के पात्र हैं। कुल 1,349 उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं।

राज्य निर्वाचन आयोग के अधिकारियों द्वारा साझा किए गए आंकड़ों के अनुसार, दिल्ली में मतदाताओं की कुल संख्या 1,45,05,358 हैं, जिनमें 78,93,418 पुरुष, 66,10,879 महिलाएं और 1,061 ट्रांसजेंडर व्यक्ति हैं। मतों की गिनती सात दिसंबर को होगी। अधिकारियों ने मतदान के लिए दिल्ली में 13,638 मतदान केंद्र स्थापित किए हैं।

लगातार चौथी बार बीजेपी जीतेगी, आप के भ्रष्टाचार पर जनता करेगी वोट से चोट: बीजेपी

दिल्ली बीजेपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता सरदार आरपी सिंह ने एमसीडी चुनाव में मतदान किया। इसके बाद उन्होंने बातचीत के दौरान स्पष्ट तौर पर कहा कि बीजेपी अपनी जीत को लेकर पूरी तरह से निश्चित है। लगातार चौथी बार एमसीडी चुनाव में जीत दर्ज कर वापस आ रही है। इस बार का चुनाव भ्रष्टाचार के मुद्दे पर हो रहा है। दिल्ली में दो-तीन कूड़े के पहाड़ हो तो साफ होंगे ही, लेकिन भ्रष्टाचार के पहाड़ अरविंद केजरीवाल ने बनाए हैं। इस बार दिल्ली की जनता मतदान करेगी।

बीजेपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता सरदार आरपी सिंह ने बातचीत के दौरान माना की वोटिंग की रफ्तार थोड़ी धीमी जरूर है, लेकिन दिन बढ़ने के साथ यह रफ्तार तेज होगी। लोग बड़ी संख्या में मतदान केंद्रों का रूख करके चोट करेंगे।

अयोध्या 30 वें वर्ष, एक अविस्मरणीय याद - जुल्म का साक्ष्य बचा कर रखना चाहिए - गुप्त

शिवाजी सरकार

सलाहकार संपादक राजनीतिक तरकस

ऐतिहासिक व पुरातात्विक डा स्वराज प्रकाश गुप्त ने दिसम्बर 1992 मे कहा था इतिहास नहीं मिटाना चाहिए। वे प्रकांड विद्वान थे।

वे कहते थे ढांचा एक जुल्म का साक्षी था। मंदिर था। वे उसे वहीं वैसे ही बचाये रखना चाहते थे। भविष्य के ऐतिहासिकों और लोगों के यादगार केलिए।

ढांचा का संरक्षण जुल्म के इतिहास के रुप मे शीशे मे बचाया जाये और युगों तक तकलीफों को जीवंत रूप से याद दिलाता रहे, यह उनकी इच्छा थी।

कुछ साक्ष्य और शिलालेख उन्होंने उस ध्वंसावशेष से अति उत्साहित कारसेवकों से बचाये। ये पुराने अयोध्या राम मंदिर का गवाह है। कोर्ट मे भी ये काम आये।

तोडने से इतिहास विकृत होता है, गुप्त जी कहते थे। इतिहास के तथ्य बदलते नहीं है। न इतिहास का पुनर्लेखन संभव, गुप्त जी का कहना था। तमाम साक्ष्य कई और शहरों मे भी हम नष्ट न करते तो हमारे बच्चे सच्चाई को करीब से देख पाते। हमे प्रेरणा मिलती रहती। पुनर्निर्माण संरक्षण होता है, ध्वंस नहीं।

जब ढांचा था वे कहते थे इसे बचाना है। यह तो आक्रान्ताओं के सभी कहानी कहते है।

शायद हम अब उनकी बातों से कुछ सीखे. और पुराने ढांचों को बचा कर रखें। ढांचे के स्मृति मे, पुनः डा स्वराज प्रकाश गुप्त जी को श्रद्धांजलि।

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक जितेंद्र तिवारी द्वारा इंप्रेशन प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18/19/20, सी ब्लॉक, सेक्टर 59, नोएडा, उ.प्र.-201301 से मुद्रित तथा ई632/7 सी संगम विहार साउथ दिल्ली -110080 से प्रकाशित। प्रकाशित लेखों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा। प्रधान संपादक : **जितेंद्र तिवारी** प्रबंध संपादक :**राजेश तिवारी**

RNI NO.: DELHIN/2016/70363 Email:tarkasnews@gmail.com Mob:9990170069 Website: www.rajneetiktarkas.in

जनसंख्या नियंत्रण मानव हित में, मीडिया को निभानी होगी बड़ी भूमिका - इन्द्रेश कुमार

- सेल्फ, सेल्फी और सेल्फिश के दौर में चौपाल का प्रयास सराहनीयः अश्विनी चौबे
- सिविल सर्विस में शामिल हो जनसंचार तभी पूर्ण होगा अमृतकालःकुलपति के जी सुरेश

ले.जे. (डॉ.) राज नंदन सिंह, गोलोक बिहारी राय, रेशमा सिंह, अशोक मालिक, प्रो. अनिल सौमित्र आदि का मिला मार्गदर्शन

चंडीगढ़ ब्यूरो
Rajneetiktarkas.in

कुलपति के जी सुरेश

प्रोफेसर कुसुमलता केडिया

रेशमा सिंह

कुलपति बलदेव भाई शर्मा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य एवं वरिष्ठ प्रचारक इंद्रेश कुमार ने कहा कि अगर चंद क्षण मुस्कुराने से फोटो बहुत सुंदर आ सकती है, तो सोचिए कि हमेशा मुस्कराते रहने से जीवन कितना सुंदर होगा। भारत को समझने की जरुरत है।

अमृतकाल में भारत अभ्युदय : चुनौतियां और संकल्प विषय पर चंडीगढ़ स्थित एनआईटीटीटीआर परिसर में आयोजित आयोजित तीन दिवसीय मीडिया चौपाल-2022 के नौवें संस्करण को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राष्ट्रीय कार्यकारिण के सदस्ये इंद्रेश कुमार ने कहा कि हमें सोचना होगा कि असत्य और भ्रम विज्ञान नहीं है। वैश्विक सत्य ज्ञान, विज्ञान के चरित्र के रूप में नजर आता है। ईश्वर सपनों में प्रतिदिन हमें नॉक करता है और हमें बताता है कि तुम हिन्दुस्तानी थे, हो और आगे भी रहोगे। उन्होंने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि अगर देश के सभी हिस्सों के लोगों का एक ग्रुप फोटो प्रदर्शित किया जाये तो उनकी पहचान किसी जाति, धर्म, गरीब, अमीर के तौर पर नहीं की जा सकेगी। सभी को एक हिन्दुस्तानी के तौर पर ही पहचाना जाएगा। हमें ईर्ष्या और नफरत की जगह मुस्कराहट को अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए। अगर चंद क्षण मुस्कुराने से फोटो बहुत सुंदर आ सकती है, तो सोचिए कि हमेशा मुस्कराते रहने से जीवन कितना सुंदर होगा। उन्होंने कहा कि भारत को समझने की जरुरत है। जनसंख्या नियंत्रण मानव हित में है और जो इसका विरोध करते हैं, वे मानवता विरोधी ही कहे जायेंगे।

सेल्फ, सेल्फी और सेल्फिश के दौर में चौपाल का प्रयास सराहनीय

कार्यक्रम के दूसरे दिन मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित केन्द्रीय राज्य मंत्री अश्विनी चौबे ने कहा कि सेल्फ, सेल्फी और सेल्फिश पत्रकारिता के दौर में जो प्रयास मीडिया चौपाल ने किया है, वह महत्वपूर्ण है। सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों पर जो समुद्र मंथन यहाँ चल रहा है, वह अवश्य ही अमृतकाल में भारत अभ्युदय को लेकर हमें संकल्पित करेगा। उन्होंने कहा कि यह भारत के अभ्युदय का अमृतकाल है। यह तकनीक का दशक भी है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसलिए हमें गौरव के साथ अपनी संस्कृति और आध्यात्मिक विरासत को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है।

चंडीगढ़ स्थित एनआईटीटीटीआर परिसर में आयोजित इस तीन दिवसीय मीडिया चौपाल में 200 से अधिक मीडिया विशेषज्ञ, शिक्षाविद्, मीडियाकर्मी, शोधार्थी आदि ने हिस्सा लिया। इस चौपाल में तीन विभिन्न विषयों पर आकादमिक सत्र का संचालन किया गया, जिसमें 21 से अधिक शोधपत्र प्रस्तुत किये गये। इसके साथ ही पांच विभिन्न विषयों पर अलग-अलग पैनल डिस्कशन और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये इस मौके पर राष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष ले.जे. (डॉ.) राज नंदन सिंह, राष्ट्रीय महामंत्री गोलोक बिहारी राय, राष्ट्रीय महामंत्री रेशमा सिंह, आयोजन समिति के अध्यक्ष अशोक मालिक, प्रोफेसर अनिल सौमित्र सहित विभिन्न लोगों की

गरि मामाय

उपस्थित रही। स्वतंत्र लेखक एवं अखिल भारतीय राष्ट्रवादी लेखक संघ के कोषाध्यक्ष मेजर सरस त्रिपाठी ने सभी का स्वागत किया और संक्षिप्त में मीडिया चौपाल के संकल्प के बारे में बताया। मंच संचालन डॉ. कुंजन आचार्य ने किया। वहीं, आभार प्रदर्शन अशोक मलिक ने किया। एनटीटीटीआर के निदेशक प्रो. श्याम सुन्दर पटनायक ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि चंडीगढ़ का चयन इस कार्यक्रम में किया जाना हमारे लिए गर्व की बात है।

मीडिया में हस्तक्षेप करने की योग्यता निर्धारित करने की जरूरतः केजी सुरेश

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केजी सुरेश ने कहा कि नागरिक पत्रकारिता आजकल ट्रेंड में है, लेकिन क्या यह शब्द प्रयोग सही है? जब सिटीजन डॉक्टर, सिटीजन इंजीनियर नहीं हो सकता तो सिटीजन पत्रकार कैसे सम्भव है? हमें पहले मीडिया में हस्तक्षेप करने की योग्यता निर्धारित करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि सिविल सर्विसेस में जनसंचार को एक विषय के रुप में शामिल किया जाना चाहिए, तभी यह अमृतकाल पूर्ण हो पाएगा।

भारत के अभ्युदय के साथ पत्रकारिता के अभ्युदय की भी हो बातः बलदेव शर्मा

कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव भाई शर्मा ने कहा कि शिक्षक और पत्रकार किसी भी राष्ट्र के चैतन्य के प्रतीक होते हैं। इसलिए पत्रकार और मीडियाकर्मी होने के नाते हमारे सोचने के दृष्टि, सोचने की क्षमता, अध्ययनशीलता बढ़नी चाहिए। भारत के अभ्युदय की बात के साथ-साथ पत्रकारिता के अभ्युदय की बात करने से ही पूरे भारत का अभ्युदय होगा। भारत की पत्रकारिता में राष्ट्र का अभ्युदय नजर आता है।

दूसरे दिन ह्वबच्चों के मुद्दे : मीडिया की भूमिका पर चर्चा की गई, जिसमें विषय-प्रवर्तन अमर उजाला डिजिटल के सम्पादक जयदीप कर्णिक ने किया। वहीं, वक्ता के तौर पर कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रेन्स फाउंडेशन के सहायक निदेशक डॉ. संगीता गौड़, पत्रकार हर्षवर्धन त्रिपाठी तथा लेखिका एवं सोलो ट्रैवेलर डॉ. कायनात काजी मौजूद रहे। सत्र का संचालन एवं संयोजन इंडिया फॉर चिल्ड्रेन के निदेशक अनिल पांडेय ने किया।

तीसरे दिन, 'मीडिया चौपाल' की परम्परा के तहत भावी आयोजन पर भी सामूहिक चर्चा सम्पन्न हुई। इस चर्चा की अध्यक्षता राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच के राष्ट्रीय महामंत्री गोलोक बिहारी राय ने की। वहीं, विषय-प्रवर्तन पत्रकार हर्षवर्धन त्रिपाठी तथा इंडिया फॉर चिल्ड्रेन के निदेशक अनिल पाण्डेय ने किया। सत्र संचालन मीडिया चौपाल के सह-संयोजन प्रो. अनिल सौमित्र ने किया और सत्र संचालन रुपाली अवाधे और आशुतोष सिंह ने किया।

इस मौके पर केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड की सदस्य अनीता चौधरी ने भारतीय पौराणिक इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत पौराणिक समय से ही समृद्ध रहा है। आज तकनीक को हम समृद्धता का प्रतीक मानते हैं लेकिन डिजिटल तकनीक ने हमारे परिवार को सबसे ज्यादा प्रभावित किया है।

सोशल मीडिया का सतर्कता पूर्वक हो उपयोगः डॉ. कायनात काजी

डॉ. कायनात काजी ने कहा कि आजकल बच्चों का रियलिटी से जुड़ाव खत्म होता जा रहा है क्योंकि उनके हाथ में हमने मोबाइल दे दिया है। हमें कहने और सुनने में अच्छा लगता है कि बच्चों के हाथ में मोबाइल नहीं होना चाहिए लेकिन यह मुमकिन नहीं है क्योंकि हमारे हाथ में जब तक मोबाइल होगा, तब तक हम बच्चों से मोबाइल दूर नहीं कर सकते। डिजिटल मीडिया एक ऐसी आग है, जिसका हमें सतर्कतापूर्वक उपयोग करना चाहिए। अगर हमने सतर्कता नहीं बरती तो यही आग हमारे घर को जला देगी।

शासक लिंगवाची शब्द नहीं है प्रो. केडिया

प्रोफेसर कुसुमलता केडिया ने कहा कि शासक लिंगवाची शब्द नहीं है अथवा उन्हें लिंग के आधार पर नहीं पहचनना चाहिए। बल्कि शासक के तौर पर ही जानना-पहचानना चाहिए। भारतवर्ष जो कि हमारा राष्ट्र है, एशिया माइनर से लेकर सुदूर प्रशांत महासागर तक फैला हुआ था, है और रहेगा। मध्य एशिया में जितने भी स्तान हैं, प्राचीन समय से भारत के ही अंग रहे हैं।

अफगानिस्तान में आतंकवादी नेटवर्क का बना रहना चिंता का विषय : एनएसए डोभाल

दिल्ली ब्यूरो
Rajneetiktarkas.in

भारत आज पहली बार कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान के शीर्ष सुरक्षा अधिकारियों के एक सम्मेलन की मेजबानी कर रहा है। इस सम्मेलन में अफगानिस्तान में उभरती सुरक्षा स्थिति और उस देश से उत्पन्न होने वाले आतंकवाद के खतरे से निपटने के तरीकों पर चर्चा की गई। इसके अलावा मध्य एशियाई देशों के साथ कनेक्टिविटी पर भी चर्चा की गई। इस बैठक की अध्यक्षता राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (ठरअ) अजीत डोभाल ने की। ठरअ डोभाल ने इस दौरान अफगानिस्तान के मुद्दे पर चर्चा करते हुए कहा कि अफगानिस्तान में आतंकवादी नेटवर्क का बना रहना चिंता का विषय है। वित्त पोषण आतंकवाद की जीवनदायिनी है और आतंकवाद के वित्तपोषण का मुकाबला करना हम सभी के लिए प्राथमिकता होनी चाहिए। संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्यों को आतंकवादी गतिविधियों में शामिल संस्थाओं को सहायता प्रदान करने से बचना चाहिए। डोभाल ने कहा कि अफगानिस्तान हम सबके लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। तत्काल प्राथमिकताओं और आगे के रास्ते के संबंध में भारत की चिंताएं और इस जुड़े उद्देश्य हम सभी के लिए समान हैं।

मध्य एशियाई देशों के साथ कनेक्टिविटी भारत के लिए प्रमुख प्राथमिकता

एनएसए डोभाल ने कहा कि मध्य एशियाई देशों के साथ कनेक्टिविटी भारत के लिए प्रमुख प्राथमिकता बनी हुई है। हम इस क्षेत्र में सहयोग, निवेश और कनेक्टिविटी बनाने के लिए तैयार हैं। कनेक्टिविटी का विस्तार करते समय यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि पहल परामर्शी, पारदर्शी और सहभागी हों।

भारत पहली बार मध्य एशियाई देशों के शीर्ष सुरक्षा अधिकारियों की मेजबानी कर रहा

पिछले साल नवंबर में भारत ने अफगानिस्तान की स्थिति पर एक क्षेत्रीय वार्ता की मेजबानी की थी, जिसमें रूस, ईरान, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और उज्बेकिस्तान के एनएसए ने भाग लिया था। लेकिन यह पहली बार है जब भारत मध्य एशियाई देशों के शीर्ष सुरक्षा अधिकारियों की मेजबानी कर रहा है।

भारत और मध्य एशियाई देशों की एक सोचः मराट इमानकुलोव

किर्गिज सुरक्षा परिषद के सचिव, मराट इमानकुलोव ने कहा कि मध्य एशियाई देशों और भारत का आतंकवाद, उग्रवाद और मादक पदार्थों की तस्करी से निपटने और अफगानिस्तान में शांति, सुरक्षा तथा स्थिरता पर इसके प्रभाव को हल करने के उपायों को विकसित करने में एक समान रुचि है।

भारत मध्य एशियाई देशों को एशिया का दिल मानता है

भारत मध्य एशियाई देशों को एशिया का दिल मानता है। ये देश शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के सदस्य भी हैं। हम व्यापक तरीके से सहयोग को आगे बढ़ाना चाहते हैं। यह बैठक भारत और मध्य एशियाई देशों के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 30वीं वर्षगांठ के अवसर पर हो रही है। अफगानिस्तान से पनपने वाले आतंकवाद और क्षेत्रीय सुरक्षा पर इसके प्रभाव को लेकर भारत और मध्य एशियाई देशों की साझा चिंताएं हैं।

रोहिणी डीपीएस स्कूल की मान्यता रद्द

फीस बढ़ाने के लिए नियमों का उल्लंघन करने का आरोप

दिल्ली के रोहिणी में स्थित डीपीएस स्कूल से जुड़े लोगों को बड़ा झटका लगा है। दिल्ली शिक्षा विभाग ने रोहिणी के पब्लिक स्कूल डीपीएस की मान्यता रद्द कर दी है। डायरेक्टर ऑफ एजुकेशन द्वारा एक आदेश जारी कर कहा गया कि स्कूल अधिकारी फीस बढ़ाने के लिए नियमों का उल्लंघन कर रहे थे. जिसके कारण स्कूल की मान्यता रद्द कर दी गई है।

इसके साथ ही ये भी कहा गया कि ये मान्यता तब तक रद्द रहेगी, जब तक स्कूल द्वारा खामियों को दूर नहीं कर लिया जाता। डायरेक्टर ऑफ एजुकेशन की तरफ से कहा गया कि स्कूल को फीस बढ़ाने से पहले शिक्षा विभाग से अनुमति लेनी होगी। ये स्कूल डीडीए की जमीन पर बना है और ये जमीन इसी शर्त पर दी गई थी कि जब भी फीस बढ़ेगी तो इसके लिए अनुमति लेनी होगी। हालांकि, ऐसा नहीं हुआ, इसलिए स्कूल की मान्यता रद्द कर दी गई है। वहीं, मान्यता रद्द होने से मौजूदा (2022-23) सत्र में छात्रों पर कोई असर नहीं पड़ेगा, लेकिन स्कूल को 2023-24 शैक्षणिक सत्र में किसी भी छात्र का प्रवेश लेने से मना किया गया है।

क्या है पूरा मामला?

दरअसल, साल 2016 में दिल्ली हाईकोर्ट ने ऐसे सभी स्कूल जो डीडीए की जमीन पर बने हैं, उन्हें ये सुनिश्चित करने को कहा था कि वो शिक्षा विभाग की बिना अनुमति के फीस नहीं बढ़ा सकते। इसके साथ ही ये आदेश दिया गया कि स्कूल 2022-23 तक चलेगा। लेकिन स्कूल में कोई नया एडमिशन नहीं होगा और फीस वापस की जाएगी। इसके बाद स्कूल को बंद कर दिया जाएगा।

छात्रों-शिक्षकों पर क्या होगा असर?

सत्र खत्म होने के बाद यहां पढ़ रहे छात्रों को उनके अभिभावकों की अनुमति से पास के स्कूल में ट्रांसफर कर दिया जाएगा। इसके साथ ही स्कूल में काम कर रहे अन्य लोग, जैसे शिक्षक और अन्य कर्मचारियों को भी डीपीएस की अन्य ब्रांच में भेज दिया जाएगा।

भरे बाजार में अपराधी ने महिला के हाथ-पैर काट डाले, इलाज के दौरान हुई मौत

भागलपुर के पीरपैंती थाना क्षेत्र के सिंघिया पुल के पास देर शाम नीलम देवी नाम की महिला पर चाकू से हमला करने का मामला सामने आया है। महिला पर हमला करने वाले आरोपी का नाम शकील मियां बताया जा रहा है। शकील मियां नाम के अपराधी ने चाकू से वार कर महिला को वीभत्स तरीके घायल कर दिया। भरे बाजार में हुई इस वारदात के बाद मौके पर भारी भीड़ जमा हो गया। लोगों की मदद से महिला को इलाज के लिए नुमंडल अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसका प्राथमिक उपचार किया गया। प्राथमिक उपचार के बाद महिला की हालत काफी नाजुक थी, जिसे देखते हुए उसे जवाहरलाल नेहरू चिकित्सा अस्पताल रेफर कर दिया गया।

महिला को इलाज के लिए जवाहरलाल नेहरू चिकित्सा अस्पताल ले जाने के दौरान रास्ते में ही उसने दम तोड़ दिया। वारदात में महिला के पीठ, दोनों हाथ काट दिए, महिला के स्तन को भी काट दिया गया। हमले को देखने वालों का कहना था कि आरोपी ऐसे वार कर रहा था जैसे वो उसे जान से मार देना चाहता था। महिला के सिर पर भी चाकू से कई वार किए गए हैं। महिला के पति ने मामले की जानकारी देते हुए बताया कि शकील मियां पहले उनके घर आता था। उसे घर आने से मना किया गया था। जिसके बाद वो गुस्से में आ गया और उसने घटना को अंजाम दिया है। वहीं, घटना के बाद कुछ लोग वहां खड़े होकर रिकॉर्डिंग कर रहे थे। इस दौरान घायल महिला ने हमलावर का नाम बताया था। वहीं, घटना के बाद पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। 5 लोगों को हिरासत में लिया गया है। वहीं, घटना का मुख्य अपराधी शकील मियां को भी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। घटना के बाद नीलम देवी के परिजनों का रो रो कर बुरा हाल है।

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
5
वर्ष वर्ष : 01 , अंक : 11, नई दिल्ली, बुधवार, 07 दिसम्बर , 2022

विवाह की बुनियाद और सहजीवन

बिभा त्रिपाठी

आज आवश्यकता इस बात की है कि वैवाहिक संबंध को पुनः परिभाषित किया जाए और अधिकारों और कर्तव्यों का पारदर्शी तरीके से परिमार्जन किया जाए। मूल्यहीनता के जिस भंवर में समाज धंसता जा रहा है उसे समय रहते उससे निकाला जाए, क्योंकि प्रभुत्व, प्रभाव और वर्चस्व की लड़ाई में कुंठित मानसिकता हावी होती है, धर्म विशेष की हठधर्मिता नहीं।

समाजशास्त्री एमिले दुर्खीम का मानना था कि जब समाज में अत्यधिक तेजी से असंगत परिवर्तन होगा, तो पुराने मूल्य और परंपराएं ध्वस्त हो जाएंगी, समाज नए मूल्यों को प्रतिस्थापित नहीं कर पाएगा। ऐसा संक्रमणग्रस्त समाज मूल्य और नैतिकता से परे एक बीमार समाज को जन्म देगा। परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है, पर जब-जब परिवर्तन की गति अनियंत्रित, अनियमित और अनुशासित रही है, प्रकृति ने कहर बरपाए हैं। नए प्रकार की सामाजिक संरचना नई मान्यताओं को गढ़ती, नए तरीके की सोच रखती, नए रास्तों और विकल्पों की तलाश करती और समाज के लिए नई चुनौतियां पैदा करती है।

भारत के विशेष संदर्भ में अगर बात करें तो यहां विवाह और परिवार को उच्च स्तरीय सामाजिक संस्था का दर्जा प्राप्त है, जिसका विकास एक लंबे कालखंड के दौरान हुआ है। हिंदू विधि में विवाह को एक संस्कार माना जाता है और मुसलिम विधि में एक संविदा। जब संस्कार की बात करते हैं तो पता चलता है कि एक वैध विवाह की कानून में कुछ शर्तें बताई गई हैं।

मसलन, होम और सप्तपदी। अगर उनका अनुपालन नहीं किया गया, तो विवाह वैध नहीं माना जाएगा। यानी अगर वर-वधू अपने इष्ट मित्रों को साक्षी मान कर मंदिर में माला आदान-प्रदान कर विवाह करते हैं तो उसे वैध विवाह नहीं माना जाएगा। यही कारण है कि द्विविवाह के जिन मुकदमों में न्यायालय को दोनों विवाह वैध नहीं मिलते, वहां द्विविवाह का अपराध भी सिद्ध नहीं माना जाता और फिर उस विवाह संबंध में आई महिला की सामाजिक विधिक स्थिति पर प्रश्न चिह्न लगता है। उसके भरण-पोषण के बाबत न्यायपालिका का निर्णय कैसा होगा, यह उस न्यायाधीश के उदारवादी दृष्टिकोण के अधीन होता है।

इससे अलग हट कर वैध रीति से ऐसे विवाहित दंपति का प्रसंग लिया जाए, जहां विवाह दहेज प्रतिषेध अधिनियम के प्रावधानों को धता बताते हुए दहेज की मांग और पूर्ति के अधीन संपन्न किया जाता है, वहां विवाह के बाद की जाने वाली मांग, प्रताड़ना और हत्याओं के मद्देनजर आपराधिक विधि में बड़े परिवर्तन किए जाते हैं और क्रूरता तथा दहेज हत्या को अपराध घोषित किया जाता है।

समय के साथ बदलते समाज में पति और पत्नी दोनों को नौकरी करने की आवश्यकता पड़ी और नौकरी की शर्तों और दशाओं को पूरा करते हुए पारिवारिक दायित्वों का बोझ अकेले पत्नी द्वारा उठाना कठिन प्रतीत होने लगा, तो इस परिस्थिति को भांपते हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं के प्रति हर प्रकार के विभेद को

> आज आवश्यकता इस बात की है कि उस वैवाहिक संबंध को पुनः परिभाषित किया जाए और अधिकारों और कर्तव्यों का पारदर्शी तरीके से परिमार्जन किया जाए। मूल्यहीनता के जिस भंवर में समाज धंसता जा रहा है उसे समय रहते उससे निकाला जाए, क्योंकि प्रभुत्व, प्रभाव और वर्चस्व की लड़ाई में कुंठित मानसिकता हावी होती है, धर्म विशेष की हठधर्मिता नहीं।

समाप्त करने के लिए एक अभिसमय अस्तित्व में आया (सीडा)। उसमें स्पष्ट कहा गया कि मातृत्व एक सामाजिक जिम्मेदारी है।

यानी समय के साथ समाज और सामाजिक संबंधों को समझौतों की सीढ़ी पर ही चलना होता है। अन्यथा एक पक्ष द्वारा झेले जा रहे तनाव, अवसाद और कुंठा को उसकी अगली पीढ़ी न सिर्फ सिरे से खारिज करती, बल्कि इस संस्था की चूलें तक हिला देती है। अब सब कुछ बदल चुका है। अब लड़की लड़कों के साथ उच्च शैक्षिक संस्थान में पढ़ती है और कई बार उसे अपने शहर से दूर जाकर रहना पड़ता है। फिर आत्मनिर्भर बनने की प्रक्रिया में सरकारी, निजी, गैरसरकारी, संगठित या असंगठित क्षेत्र में नौकरी करनी पड़ती है। ऐसे में इस युवा पीढ़ी के साथ जाने-अनजाने ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं, जब इन्हें अपने विपरीत लिंगी व्यक्ति के साथ भी रहना पड़ता है। इसका कानूनी संदर्भ में देखें तो लगता है कि हमारे यहां कानून में इस आशय का कोई भी विधान नहीं है, जो दो वयस्क लोगों को स्वेच्छा से साथ रहने में किसी प्रकार की कोई रोक लगाता हो। यहां कानून नैतिकता के साथ कदमताल में पीछे छूट जाता है।

हांलाकि कानूनी तौर पर किसी कृत्य को अपराध न मानना एक बात है और रूढ़िवादिता की जड़ों में पनपते पितृसत्तात्मक समाज का घृणास्पद पहलू दूसरी बात। ऐसी परिस्थितियां भी समाज में बनने लगी हैं कि वयस्क युवक-युवतियां बिना विवाह के एक साथ एक छत के नीचे पति-पत्नी की तरह रहने लगे हैं, लेकिन सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वाह करने को तैयार नहीं हैं।

नतीजतन, ऐसे संबंधों में भी हर प्रकार की शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और लैंगिक हिंसा की घटनाएं सामने आने लगीं। इसके मद्देनजर 2005 में महिलाओं को घरेलू हिंसा से संरक्षण प्रदान करने के लिए अधिनियम बनाया गया। उसमें कहा गया कि ऐसे जोड़े, जो बिना विवाह के भी साथ रह रहे हैं और स्त्री हिंसा की शिकार हो रही है, उसे संरक्षण प्रदान किया जाएगा। उक्त अधिनियम में हिंसा को रोकने की व्यवस्था की गई थी, न कि बिना विवाह के पति-पत्नी की तरह रहने वालों को कानूनी मान्यता प्रदान की गई। यानी कानूनी रूप से विवाहित पत्नी तो होती है, मगर कानूनी रूप से सहजीवन नहीं सुना गया है। कहने का तात्पर्य यह कि वर्तमान समाज की संक्रमण कालीन विभीषिका ने पुरानी संस्थाओं को तिरस्कृत कर उससे बगावत करने को उत्प्रेरित कर दिया।

युवा पीढ़ी की लड़कियों को लगा कि अगर विवाह का बंधन नहीं होगा तो उससे जुड़ी पेचीदगियां भी नहीं झेलनी पड़ेंगी, क्योंकि उन्होंने सुन रखा था कि महिलाओं के उत्पीड़न की मूल जड़ विवाह है। पर ऐसा नहीं हुआ, बल्कि एक नए प्रकार की समस्या उत्पन्न हुई कि ऐसी लड़कियों के अपने अभिभावकों से संबंध टूट गए। इस तरह आधुनिक बनने की होड़ और समूहगत दबाव में जब युवा पीढ़ी ने प्रेम, विश्वास, त्याग और समर्पण जैसे मूल्यों को तिलांजलि दे दी, तो उनके समक्ष कोई विकल्प नहीं बचा।

आजकल श्रद्धा हत्याकांड के विविध पक्षों पर बहस हो रही है और कहीं 'लव जिहाद' और 'घर वापसी' जैसे मुद्दों पर दंगल चल रहा है। गौरतलब है कि आज से बीस वर्ष पहले नैना साहनी तंदूर कांड भी इससे कुछ अलग नहीं था। सुशील शर्मा ने नैना साहनी के साथ अपने संबंधों को सार्वजनिक मान्यता देने की जगह नैना के एक मुसलिम मित्र से संबंध के शक में गोली मार दी और सबूत मिटाने के लिए उसके शरीर की बोटी-बोटी बगिया रेस्तरां के तंदूर में जला दी। आज की तारीख में अभियुक्त की मृत्युदंड की सजा आजीवन कारावास में बदली जा चुकी है।

ऐसे में न सिर्फ समाज के ठेकेदारों, बल्कि इस उदीयमान युवा पीढ़ी को यह समझना होगा कि हमें आधुनिकता, भौतिकता और विकृत पूंजीवादिता की अंधी खाई में कुछ भी प्राप्त नहीं होने वाला। अब यह भी समझना होगा कि अगर एक स्तर पर आकर यह आरोप लगाया जाता है कि अमुक व्यक्ति द्वारा विवाह का आश्वासन देकर शारीरिक संबंध बनाए गए थे, तो न्यायालय भी मदद कर पाने की स्थिति में नहीं रह जाता है।

वह पूछता है कि अगर आप वयस्क थे और स्वतंत्र सहमति के मायने जानते थे तो आपको यह भी समझना चाहिए कि ठहराव कहां और कब आना चाहिए। अगर हम उन मानवीय मूल्यों की तलाश एक अंधे कुएं में करेंगे तो हमें सफलता नहीं मिलेगी। अगर विवाह को महिला उत्पीड़न की मूल वजह मानने वालों से पूछा जाए कि इसका समाधान क्या नैना साहनी या श्रद्धा हत्याकांड में दिखाई देता है, तो आवाज आएगी कि नहीं।

यानी आज आवश्यकता इस बात की है कि उस वैवाहिक संबंध को पुनः परिभाषित किया जाए और अधिकारों और कर्तव्यों का पारदर्शी तरीके से परिमार्जन किया जाए। मूल्यहीनता के जिस भंवर में समाज धंसता जा रहा है उसे समय रहते उससे निकाला जाए, क्योंकि प्रभुत्व, प्रभाव और वर्चस्व की लड़ाई में कुंठित मानसिकता हावी होती है, धर्म विशेष की हठधर्मिता नहीं।

पदाधिकारी को जिम्मेदारी से निभानी होगी अपनी भूमिका: खड़गे

कांग्रेस अध्यक्ष मलिकार्जुन खड़गे ने रविवार को कहा कि पार्टी के हर पदाधिकारी और नेता को जिम्मेदारी के साथ जनसेवा की अपनी भूमिका निभाकर मोदी सरकार से त्रस्त हर व्यक्ति के साथ खड़ा होना पड़ेगा और सेवाभाव के इसी समर्पण के बल पर पार्टी को सत्ता में लाया जा सकेगा।

श्री खड़गे ने आज यहां कांग्रेस संचालन समिति की बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि कुछ साथी यदि मानते हैं कि जिम्मेदारियों को नजरअंदाज किया जा सकता है तो यह उनकी भूल होगी और इससे मंजूर नहीं किया

जा सकता है। पदाधिकारी अगर जिम्मेदारी निभाने में सक्षम नहीं है तो उनकी जगह पार्टी के नए नेताओं को मौका देना पड़ेगा। इस कठिन इरादे के साथ चलकर ही कांग्रेस को सत्ता में लाया जा सकता है।

कांग्रेस अध्यक्ष चुनाव के बाद पार्टी की सर्वोच्च नीति निर्धारक संस्था कार्यसमिति के स्थान पार्टी के काम को आगे बढ़ाने के लिए संचालन समिति का गठन किया गया था और अब कांग्रेस के अधिवेशन में नए पदाधिकारियों की नियुक्ति की जाएगी। पार्टी के अध्यक्ष के चुनाव के बाद समिति की यह पहली बैठक हुई जिसमें पार्टी की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी और संचालन समिति के सदस्यों ने हिस्सा लिया। बैठक में कांग्रेस अधिवेशन की तिथि को लेकर भी विचार विमर्श किया जाना है।

उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने देश के समक्ष कई चुनौतियां पैदा कर दी है और इन चुनौतियों के कारण आम आदमी के समक्ष कई तरह के संकट पैदा हो गए हैं। पार्टी के पदाधिकारियों को लोगों की इन समस्याओं को जिम्मेदारी के साथ सुनना, समझना और उनके निराकरण के लिए प्रयास करना है। कांग्रेस नेता ने कहा, सत्ताधारी ताकतें वर्तमान माहौल में नफरत के बीज बोकर बंटवारे की खेती काटने में लगी हैं और उसके खिलाफ कांग्रेस के हर नेता और पदाधिकारी को मिलकर लड़ना है। यह हम सब का कर्तव्य है और राष्ट्रधर्म भी यही है।

जनसंख्या

बूढ़ा होता यूरोप

अभिषेक कुमार

बीते 15 नवंबर को फिलीपींस के तोंदों (मनीला) में जन्मी एक बच्ची के साथ ही विश्व की जनसंख्या 8 बिलियन के स्तर पर पहुंच गई। लेकिन यह जनसंख्या विश्व में असामान्य रूप से वितरित है। एक तरफ जहां एशिया महाद्वीप में दुनिया की आधी जनसंख्या निवास करती है (भारत और चीन में ही लगभग 2.8 बिलियन लोग रहते हैं) वहीं दूसरी तरफ ऑस्ट्रेलिया, दक्षिणी अमेरिका, उत्तरी अमेरिका और यूरोप की जनसंख्या तुलनात्मक रूप से काफी कम है। यूरोस्टट के एक आंकड़े के मुताबिक 1 जनवरी 2022 को यूरोपियन यूनियन के 27 देशों की कुल जनसंख्या 446.8 मिलियन थी। कोरोना महामारी के आगमन के बाद से ही पिछले दो सालों में यूरोप की जनसंख्या में गिरावट देखी गई है जिससे जन्म दर कम होने की वजह से आगे भी जारी रहने का अनुमान है। संयुक्त राष्ट्र संघ के मुताबिक यूरोप की जनसंख्या वर्ष 2100 तक मात्र 365 मिलियन रह जाएगी। पूर्वी–यूरोप और मध्य–यूरोप के देश जैसे लिथुआनिया, लातविया, बुल्गारिया, करोटिया, रोमानिया, पोलैंड और हंगरी की जनसंख्या, कम जन्म दर और अन्य यूरोपीय देशों की तरफ प्रवास की वजह से तेजी से घटी है और पश्चिमी–यूरोप और उत्तरी यूरोप के देशों में भी जन्म दर कम हो जाने की वजह से जनसंख्या के काफी तेजी से घटने के आसार दिखाई दे रहे हैं।

अमूमन कम जनसंख्या होना एक अच्छी चीज समझी जाती है परंतु जब जन्म दर कम होने की वजह से जनसंख्या कम होने लगती है तो वह काफी चुनौतीपूर्ण होता है जैसा यूरोप में हो रहा है और आगे पुरजोर तरीके से होने वाला है। जब किसी देश या क्षेत्र में कम जन्म दर होने की वजह से जनसंख्या कम होने लगती है तो वहां आश्रित जनसंख्या (मुख्यत: बूढ़े लोगों की संख्याग बच्चों की जनसंख्या को छोड़कर) कार्यरत जनसंख्या के मुकाबले बढ़ने लगती है, इस स्थिति में अर्थव्यवस्था को चलाना एक मुश्किल भरा काम बन जाता है क्योंकि काम करने वाले लोग, बूढ़े लोगों के मुकाबले कम हो जाते हैं। ऊपर से वृद्ध लोगों की जनसंख्या ज्यादा होने की वजह से उनकी स्वास्थ्य सेवाओं और पेंशन पर भी बहुत ज्यादा खर्च होता है और इस तरह से यह देश के 'वेल्फेयर सिस्टम' पर अतिरिक्त बोझ पड़ता है।

कार्यरत जनसंख्या के कम होने की अवस्था में सरकारों के सामने मुख्यत: दो ही रास्ते बचते हैं– या तो वह जन्म दर बढ़ाए या फिर अपने रास्ते अप्रवासियों के लिए खोलें। यूरोप में जन्म दर बढ़ाने के प्रयास कुछ खास कारगर नहीं रहे हैं इस स्थिति में यूरोपीय देश अपने द्वार अप्रवासियों के लिए खोल रहे हैं। यूरोपियन कमीशन के एक डाटा के मुताबिक 1 जनवरी 2021 को यूरोपियन यूनियन में अप्रवासियों की तादाद 23.7 मिलियन तक पहुंच गई। परंतु अप्रवासियों की जनसंख्या बढ़ने की वजह से 'यूरोपीय समाज' में काफी दिक्कतें सामने आ रही हैं। पहला, यूरोप के काफी इसे इलाके हैं जिनमें स्थानीय जनसंख्या अप्रवासियों की जनसंख्या के मुकाबले कम हो गई है। दूसरा, अप्रवासियों के आने से उनको भोजनग आवास, रोजगारग चिकित्सा, शिक्षा आदि प्रदान करना भी एक चुनौती बन गई है। हालांकि 'यूरोपियन अथॉरिटीस' इस दिशा में काम कर रही हैं लेकिन वे नाकाफी साबित हो रहे हैं। तीसरा, सबसे बड़ी चुनौती तो इन प्रवासियों को यूरोपीय समाज की संस्कृति, सामाजिक, राजनीतिक और आतथक परिवेश के हिसाब से ढालने में आ रही है। इसके लिए यूरोपीय देशों ने काफी कदम उठाए हैं जैसे अप्रवासियों के लिए 'क्रैश कोर्स' विकसित करना जिसमें उस देश की भाषा, मूल्यों और समाज की जानकारी दी जाती है, अप्रवासियों को कौशल विकास की शिक्षा देना इत्यादि। चौथा, आप्रवासियों के आने से यूरोपीय समाज में उनके खिलाफ भेदभाव और नफरत बढ़ी है जिसका परिणाम है की दो धातमक गुटों जैसे मुस्लिम और ईसाई, मुस्लिम और यहूदी आदि में झड़पों के मामले सामने आए हैं। पांचवां, अप्रवासियों की संख्या बढ़ने से यूरोपीय देशों की आंतरिक और राष्ट्रीय सुरक्षा को भी खतरा बढ़ा है क्योंकि आतंकवादी संगठन अप्रवासियों के माध्यम से अपने हितों को साध रहे हैं।

जैसे तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या अच्छी नहीं होती वैसे तेजी से घटती हुई जनसंख्या भी अच्छी नहीं होती क्योंकि यह बहुत सारी चुनौती लेकर आती है जैसे कार्यरत जनसंख्या की कमी, उत्पादकता में कमी, श्रम लागत में वृद्धि, अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धा की कमी और सैन्य ताकत में कमी। आज यूरोप कहीं न कहीं इन सारी चुनौतियों का सामना कर रहा है और ज्यादा कठोर तरीके से भविष्य में करने वाला है। यहां पर भारत को भी सीखने की जरूरत है कि वह अपनी जनसंख्या को कम करने पर काम करे पर उसकी जनसंख्या इतनी भी तेजी से कम ना हो कि भविष्य में उसकी कार्यरत जनसंख्या, आश्रित जनसंख्या के मुकाबले कम हो जाए और जो आज यूरोप में हो रहा और होने वाला है वह भविष्य में यहां भी उत्पन्न हों।

(शोधार्थी, सेंटर फॉर यूरोपियन स्टडीस, जेएनयू)

सांवली स्किन को इन घरेलू तरीके से बनाएं ग्लोइंग

सांवली स्किन के नाम से ही हम अपनी सुंदरता में कमी महसूस करने लगते हैं। कई महिलाएं तो सांवले रंग को लेकर कम्पैरिजन का शिकार हो जाती हैं, जबकि सांवला रंग जयादा आकर्षित करता है। भला कौन-सी लड़की नहीं चाहती कि उसकी स्किन ग्लोइंग और हैल्दी हो। यदि आप अक्सर अपने आसपास के लोगों की गोरी त्वचा को देख निराश हो जाते हैं या अपनी सावंली त्वचा में और निखार पाना चाहते हैं तो आप भी अपना सकते हैं कुछ घरेलु तरीके जिससे आपकी स्किन भी खूबसूरत बनी रहती है।

-सांवली त्वचा के लिए बेसन काफी असरदार है। कच्चे दूध, बेसन और नींबू के रस का मिश्रण बनाएं तथा इसे चेहरे पर लगाएं। 15 मिनट के बाद इसे ठन्डे पानी से धो लें।

-नींबू के रस और हल्दी से सांवली त्वचा के लिए काफी अच्छा मास्क बनता है। इससे त्वचा में काफी निखार आता है।

-एलोवेरा का गूदा, हल्दी पाउडर और दूध सांवली त्वचा को गोरा करने के काफी प्रभावशाली उपाय हैं। इन तीनों को मिलाकर एक पेस्ट बनाएं और इसे चेहरे पर लगाएं। इसे धन से पहले 15 मिनट तक चेहरे पर रखें।

-सांवले रंग को दूर करने के लिए हफ्ते में 3 से 4 बार नारियल के तेल से चेहरे की मसाज करें।

- हल्दी, दहीं, दूध की मलाई को मिलकर इसका लैप चेहरे पर 1 घंटे तक लगाए रखे फिर पानी से मुह धो ले।

लगातार 1 महीने तक इस पैक का इस्तेमाल करने से आप खुद फर्क महसूस करेंगे। इससे त्वचा को पोषण मिलता है और पोर्स में जमा धूल-मिट्टी भी निकल जाती है, जिससे त्वचा में चमक आती है।

याद रखें, रंग चाहे गोरा हो या काला, आपकी अंदरूनी खूबसूरती ही आपकी पर्सनैलिटी को निखारती है लेकिन हां, इस पैक को लगाकर आप अपने चेहरे का नूर जरूर बढ़ा सकती है।

कर्ली हेयर को स्टाइलिश बनाने के टिप्स

कर्ली बालों को अगर सॉफ्ट रखना है तो उन्हेंत केमिकल वाले रंगों से दूर रखें और उन पर ज्या दा एक्सीपेरिमेंट न करें. अगर आप अपने कर्ली बालों पर ध्याफन देंगी तो वे मुलायम और चमकदार बन जाएंगे. आइये जानते हैं कर्ली बालों को स्टाइलिश बनाने के कुछ खास टिप्सः-

-बालों को प्राकृतिक रूप से ही सूखने दें क्योंकि हेयर ड्रायर से सुखाए हुए बालों से सिर की त्वलचा कठोर हो जाती है और बाल जल जाते हैं.

-कर्ली हेयर जल्द ही रूखे दिखते हैं, इसलिए इन्हें नियमित रूप से ट्रिम कराते रहें. अगर आप ऐसा नहीं करेंगी तो बालों के अगले सिरे कमजोर हो सकते हैं. इससे बाल टूटने लगते हैं.

-ऐसे शैंपू और कंडीशनर का चुनाव करें जो आपके बालों के टेक्सरचर को सूट करे. ऐसे केमिकल वाले प्रोडक्ट से बचें जो बालों की समस्याजओं को बढ़ा सकते हैं.

-एक कप में गरम पानी लें और उसमें 1 चम्म च एप्प ल साइडर वेनिगर मिलाएं. नहाते वक्तक शैंपू के बाद बालों पर इसे डाल कर बिना धोए इस पर कंडीशनर लगाएं.

-बालों में प्राकृतिक नमी को बरकरार रखने के लिए उन्हेंर ज्या दा न धोएं वरना वे रूखे हो जाएंगे.

-बालों में तेल लगाइए पर ज्याबदा तेल लगाने की जरूरत नहीं है. बालों को रूखा न होने दें.

-नहाने के बाद बालों से अत्यबधिक पानी को निचोड़ कर निकाल दें. फिर बालों में अपनी इच्छो से स्टानइल बनाएं और फिर बालों के सूखने का इंतजार करें. इससे बालों में अच्छो से नमी समा जाएगी और वे लंबे समय तक कोमल रहेंगे.

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
7
वर्ष : 01, अंक : 11, नई दिल्ली, बुधवार, 07 दिसम्बर, 2022

आयातित तेल के दाम टूटना जारी, तेल-तिलहन कीमतों में गिरावट

विदेशी बाजारों में तेल-तिलहनों के दाम टूटना जारी रहने के कारण में देशी तेल तिलहनों के भाव प्रभावित हुए, जिससे दिल्ली तेल-तिलहन बाजार में शनिवार को सोयाबीन तेल, कच्चा पामतेल (सीपीओ), बिनौला और पामोलीन तेल कीमतों में गिरावट देखने को मिली। देशी तेल तिलहनों की पेराई महंगा बैठने और सस्ते आयातित तेलों के मुकाबले इन तेलों के भाव बेपड़ता होने के बीच सरसों और मूंगफली तेल-तिलहन तथा सोयाबीन तिलहन के भाव पूर्वस्तर पर बने रहे।

बाजार सूत्रों ने कहा, ''विदेशी तेलों में आई गिरावट हमारे देशी तेल तिलहनों पर कड़ा प्रहार कर रहा है जिससे समय रहते नहीं निपटा गया तो स्थिति संकटपूर्ण होने की संभावना है। विदेशी तेलों के दाम धराशायी हो गये हैं और हमारे देशी तेलों के उत्पादन की लागत अधिक बैठती है। अगर स्थिति को संभाला नहीं गया तो देश में तेल तिलहन उद्योग और इसकी खेती गंभीर रूप से प्रभावित होगी। सस्ते आयातित तेलों पर आयात कर अधिकतम करते हुए स्थिति को संभाला नहीं गया तो किसान तिलहन उत्पादन बढ़ने के बजाय तिलहन खेती से विमुख हो सकते हैं क्योंकि देशी तेलों के उत्पादन की लागत अधिक होगी। देश के आयात पर पूर्ण निर्भरता होने के कारण भारी मात्रा में विदेशीमुद्रा का अपव्यय बढ़ सकता है।''

सूत्रों ने कहा कि सरसों, मूंगफली, सोयाबीन और बिनौला जैसे देशी तेल तिलहन की हमें बिजाई हर साल करनी होती है। इसके अलावा खाद, पानी, बिजली, डीजल, मजदूरी जैसी लागत हर साल वहन करना होता है लेकिन पाम और पामोलीन के मामले में यह स्थिति भिन्न है क्योंकि एक बार इनके पेड़ लगाने के बाद मामूली देखरेख खर्च के साथ बगैर बड़ी लागत के अगले लगभग कई सालों तक ऊपज प्राप्त होती रहती है।

सूत्रों ने कहा कि कई तेल तिलहन विशेषज्ञ, पूर्वोत्तर राज्यों सहित देश के कुछ अन्य भागों में पाम की खेती बढ़ाने की सलाह देते हैं और इस दिशा में सरकार ने प्रयास भी किये हैं। ऐसा करना एक हद तक सही है लेकिन यदि हमें पशुचारे, डीआयल्ड केक (डीओसी) और मुर्गीदाने की पर्याप्त उपलब्धता और आत्मनिर्भरता चाहिये तो वह सरसों, मूंगफली, सोयाबीन और बिनौला जैसे देशी फसलों से ही प्राप्त हो सकता है। निजी उपयोग के अलावा इसका निर्यात कर देश के लिए विदेशीमुद्रा भी अर्जित किया जा सकता है। तेल तिलहन के संदर्भ में इन वास्तविकताओं को ध्यान में रखकर ही कोई फैसला लिया जाना चाहिये।

सूत्रों ने कहा कि देश के प्रमुख तेल संगठनों को सरकार को जमीनी हकीकत भी बताना चाहिये कि सस्ते खाद्यतेलों के आयात से देश के तेल तिलहन उत्पादन में आत्मनिर्भर होने का लक्ष्य गंभीर रूप से प्रभावित होगा और इस स्थिति को बदलने के लिए इन सस्ते आयातित तेलों पर पहले की तरह और हो सके तो अधिकतम सीमा तक आयात शुल्क लगा दिया जाना चाहिये। अगर खाद्य तेलों के दाम कम रहे तो खल की भी उपलब्धता कम हो जायेगी। सस्ते आयात के मद्देनजर सीपीओ, पामतेल, बिनौला और सोयाबीन तेल कीमतों में गिरावट आई। जबकि शादी विवाह के मौसम की मांग के बीच देशी तेलों का भाव बेपड़ता बैठने के कारण सरसों और मूंगफली तेल तिलहन और सोयाबीन दाना एवं सोयाबीन लूज (तिलहन) के दाम पूर्वस्तर पर बने रहे।

शनिवार को तेल-तिलहनों के भाव इस प्रकार रहे

सरसों तिलहन - 7,100-7,150 (42 प्रतिशत कंडीशन का भाव) रुपये प्रति क्विंटल।
मूंगफली - 6,360-6,420 रुपये प्रति क्विंटल।
मूंगफली तेल मिल डिलिवरी (गुजरात) - 14,800 रुपये प्रति क्विंटल।
मूंगफली रिफाइंड तेल 2,390-2,655 रुपये प्रति टिन।
सरसों तेल दादरी- 14,000 रुपये प्रति क्विंटल।
सरसों पक्की घानी- 2,120-2,250 रुपये प्रति टिन।
सरसों कच्ची घानी- 2,180-2,305 रुपये प्रति टिन।
तिल तेल मिल डिलिवरी - 18,900-21,000 रुपये प्रति क्विंटल।
सोयाबीन तेल मिल डिलिवरी दिल्ली- 13,400 रुपये प्रति क्विंटल।
सोयाबीन मिल डिलिवरी इंदौर- 13,250 रुपये प्रति क्विंटल।
सोयाबीन तेल डीगम, कांडला- 11,500 रुपये प्रति क्विंटल।
सीपीओ एक्स-कांडला- 8,450 रुपये प्रति क्विंटल।
बिनौला मिल डिलिवरी (हरियाणा)- 11,450 रुपये प्रति क्विंटल।
पामोलिन आरबीडी, दिल्ली- 9,950 रुपये प्रति क्विंटल।
पामोलिन एक्स- कांडला- 9,000 रुपये (बिना जीएसटी के) प्रति क्विंटल।
सोयाबीन दाना - 5,450-5,550 रुपये प्रति क्विंटल।
सोयाबीन लूज 5,260-5,310 रुपये प्रति क्विंटल।
मक्का खल (सरिस्का) 4,010 रुपये प्रति क्विंटल।

आरबीआई बैठक और विधानसभा चुनाव नतीजों पर रहेगी बाजार की नजर

अमेरिकी फेड रिजर्व के ब्याज दर में बढ़ोतरी की गति धीमी रखने के संकेत और चीन में विरोध के बाद कोविड प्रतिबंधों में ढील दिये जाने की उम्मीद में 63 हजार अंक के नये शिखर पर पहुंचा घरेलू शेयर बाजार मुनाफावसूली का शिकार होने के बावजूद बीते सप्ताह 0.92 प्रतिशत की तेजी हासिल करने में कामयाब रहा और अगले सप्ताह रिजर्व बैंक (आरबीआई) की मौद्रिक नीति समीक्षा के साथ ही विधानसभा चुनाव के नतीजों पर उसकी नजर रहेगी।

बीते सप्ताह बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 574.86 अंक यानी 0.92 प्रतिशत की तेजी लेकर सप्ताहांत पर 62868.50 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 183.35 अंक अर्थात 0.99 प्रतिशत की छलांग लगाकर 18696.10 अंक पर रहा।

समीक्षाधीन सप्ताह बीएसई की दिग्गज कंपनियों से कहीं अधिक मझौली और छोटी कंपनियों में तेजी रही, जिससे बाजार को बल मिला। इस दौरान मिडकैप 726.02 अंक यानी 2.84 प्रतिशत उछलकर सप्ताहांत पर 26321.65 अंक और स्मॉलकैप 710.1 अंक अर्थात 2.43 प्रतिशत की उड़ान भरकर 29911.ल73 अंक पर पहुंच गया।

विश्लेषकों के अनुसार, पिछले सप्ताह निफ्टी, सेंसेक्स और बैंक निफ्टी सभी नई ऊंचाई पर पहुंचे लेकिन ऊंचे भाव पर कुछ मुनाफावसूली भी हुई। घरेलू शेयर बाजार बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं और अब वैश्विक संकेत भी साथ दे रहे हैं। अच्छी खबर यह है कि सुस्त व्यापक बाजार में सुधार होने शुरू हो गये हैं। वैश्विक संकेतों से अस्थिरता बनी रहती है लेकिन अगले सप्ताह बाजार का ध्यान आरबीआई की मौद्रिक नीति समीक्षा और राज्यों के चुनाव परिणामों जैसे घरेलू संकेतों पर केंद्रित होगा।

आरबीआई की मौद्रिक नीति कमेटी (एमपीसी) की बैठक के परिणाम 07 दिसंबर को आने हैं। वहीं, गुजरात और हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव के नतीजे 08 दिसंबर को आएंगे। अगले सप्ताह इन कारकों का असर बाजार पर दिखाई देगा।

वैश्विक मोर्चे पर अमेरिकी बॉन्ड यील्ड और डॉलर इंडेक्स में तेजी से गिरावट आई है और बाजार यहां से उनकी चाल पर नजर रखेंगे। भारत को कच्चे तेल की कम कीमतों का भी लाभ मिल रहा है, जो डॉलर सूचकांक में गिरावट के बावजूद नहीं बढ़ा। दिसंबर में विदेशी संस्थागत निवेश का प्रवाह सुस्त रह सकता है। इनका असर भी बाजार पर रहेगा।

बीते सप्ताह बाजार में चार दिन तेजी और एक दिन गिरावट पर रहा। कोविड प्रतिबंधों को लेकर चीन में शुरू हुए विरोध प्रदर्शन से वैश्विक बाजार में आई गिरावट के बावजूद स्थानीय स्तर पर रिलायंस के शेयरों में करीब साढ़े तीन प्रतिशत की उछाल की बदौलत सोमवार को सेंसेक्स 211.16 अंक मजबूत होकर 62504.80 अंक और निफ्टी 50 अंक की बढ़त लेकर 18562.75 अंक पर पहुंच गया। चीन में विरोध प्रदर्शन के बाद कोविड प्रतिबंधों में ढील दिये जाने की उम्मीद से एशियाई बाजारों में आई तेजी से उत्साहित निवेशकों की स्थानीय स्तर पर एफएमसीजी सहित ग्यारह समूहों में हुई लिवाली की बदौलत मंगलवार को सेंसेक्स 177.04 अंक की तेजी लेकर 62681.84 अंक के सार्वकालिक नये स्तर पर और निफ्टी 55.30 अंक चढ़कर 18618.05 अंक पर पहुंच गया।

अमेरिकी फेड रिजर्व के अध्यक्ष जेरोम पॉवेल के होने वाले वक्तव्य में अर्थव्यवस्था को लेकर शुभ संकेत मिलने की उम्मीद में वैश्विक बाजार में आई तेजी से उत्साहित निवेशकों की अंतिम समय में हुई चौतरफा लिवाली की बदौलत बुधवार को सेंसेक्स 417.81 अंक की उड़ान भरकर पहली बार 63 हजार अंक के मनोवैज्ञानिक स्तर के पार 63099.65 अंक और निफ्टी 140.30 की तेजी लेकर अबतक के रिकॉर्ड 18758.35 अंक पर पहुंच गया। अमेरिकी फेड रिजर्व के ब्याज दर में बढ़ोतरी की गति धीमी रखने के संकेत से वैश्विक बाजार में आई तेजी की बदौलत स्थानीय स्तर पर आईटी, धातु, रियल्टी, टेक और कमोडिटीज समेत बारह समूहों में हुई लिवाली से गुरुवार को सेंसेक्स 184.54 अंक की उछाल लेकर 63284.19 अंक के नये शिखर और निफ्टी 54.15 अंक की बढ़त लेकर 18812.50 अंक पर पहुंच गया।

वहीं, वैश्विक बाजार की गिरावट के दबाव में स्थानीय स्तर पर एमएमसीजी, आईटी, यूटिलिटीज, ऑटो, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स, टेक और पावर समेत ग्यारह समूहों में हुई बिकवाली से शुक्रवार को शेयर बाजार की पिछले लगातार छह दिन की तेजी थम गई। सेंसेक्स 415.69 अंक की गिरावट लेकर 62868.50 अंक और निफ्टी 116.40 अंक अर्थात 0.62 प्रतिशत लुढ़ककर 18696.10 अंक पर आ गया।

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
8
वर्ष : 01, अंक : 11, नई दिल्ली, बुधवार, 07 दिसम्बर , 2022

जीता हुआ मैच हारी टीम इंडिया

केएल राहुल ने मेहदी हसन का आसान कैच छोड़ा, आखिरी विकेट के लिए 54 रन की पार्टनरशिप

बांग्लादेश ने तीन मैचों की वनडे सीरीज के पहले मुकाबले में भारत को एक विकेट से हरा दिया है। टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए भारतीय टीम 41.2 ओवर में 186 रन पर सिमट गई। केएल राहुल ने सबसे ज्यादा 73 रन बनाए। जवाब में एक वक्त टीम इंडिया मजबूत स्थिति में थी। उसने 136 पर बांग्लादेश के नौ विकेट गिरा दिए थे।

हालांकि, इसके बाद मैदान पर बड़ी गलतियां कर भारतीय टीम ने मैच को अपने हाथ से निकल जाने दिया। केएल राहुल ने 43वें ओवर में बांग्लादेश की जीत के हीरो रहे मेहदी हसन मिराज का आसान कैच छोड़ दिया। उस वक्त मिराज 15 रन पर बल्लेबाजी कर रहे थे। इसका फायदा उठाकर मिराज और मुस्तफिजुर रहमान ने 10वें यानी आखिरी विकेट के लिए 51 रन की नाबाद साझेदारी कर डाली।

मिराज ने एकतरफा अंदाज में अपनी टीम को जीत दिलाई। वह 39 गेंदों पर 38 रन बनाकर नाबाद रहे। वहीं, मुस्तफिजुर नौ रन बनाकर नाबाद रहे। इस जीत के साथ बांग्लादेश ने सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली है। सीरीज का अगला मैच सात दिसंबर को ढाका के शेर-ए-बांग्ला स्टेडियम में खेला जाएगा।

बांग्लादेश ने सात साल बाद भारत के खिलाफ कोई वनडे जीता। पिछली बार टीम 21 जून, 2015 को भारत के खिलाफ वनडे में जीती थी। इसके बाद छह मैच खेले गए। भारत ने लगातार पांच मैच जीते और इस मैच में हार का सामना करना पड़ा।

टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए भारतीय टीम की शुरूआत कुछ खास नहीं रही। 23 रन के स्कोर पर शिखर धवन टीम का साथ छोड़ गए। धवन ने 17 गेंद में सात रन बनाए। इसके बाद रोहित शर्मा भी 27 रन बनाकर आउट हो गए। शाकिब के इसी ओवर में विराट कोहली भी पवेलियन लौट गए। कोहली ने नौ रन बनाए। 49 रन पर तीन विकेट गंवाकर भारतीय टीम संघर्ष कर रही थी। इसके बाद श्रेयस अय्यर और लोकेश राहुल ने भारत का स्कोर 92 रन तक पहुंचाया। श्रेयस भी 24 रन बनाकर आउट हो गए। ाांचवें विकेट के लिए लोकेश राहुल ने वॉशिंगटन सुंदर के साथ 60 रन की साझेदारी कर भारत का स्कोर 150 के पार पहुंचाया। इसके बाद सुंदर भी 19 रन बनाकर शाकिब का शिकार बने। सुंदर के आउट होते ही भारतीय पारी ताश के पत्तों की तरह ढह गई। शाहबाज अहमद और दीपक चाहर खाता खोले बिना आउट हुए। शार्दुल ठाकुर दो और मोहम्मद सिराज नौ रन बनाकर आउट हुए।

मोहम्मद सिराज के रूप में भारत का 10वां विकेट गिरा। इबादत हसन की गेंद पर महमुदुल्लाह ने उनका कैच पकड़ा। सिराज ने 20 गेंद में नौ रन बनाए। कुलदीप सेन दो रन बनाकर नाबाद रहे। बांग्लादेश के लिए शाकिब अल हसन ने पांच और इबादत हसन ने चार विकेट लिए। मेहदी ने एक विकेट लिया।

187 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी बांग्लादेश की टीम की शुरूआत खराब रही। दीपक चाहर ने पारी की पहली ही गेंद पर नजमुल हुसैन शांतो को स्लिप में रोहित के हाथों कैच कराया। इसके बाद अनामुल हक भी 14 रन बनाकर सिराज की गेंद पर कैच आउट हो गए। कप्तान लिटन दास और शाकिब अल हसन ने तीसरे विकेट के लिए 48 रन की साझेदारी निभाई। लिटन 63 गेंदों में 41 रन बनाकर आउट हुए। इसके बाद शाकिब भी 29 रन बनाकर आउट हो गए। दोनों को वॉशिंगटन सुंदर ने पवेलियन भेजा। मुशफिकुर रहीम (18) और महमुदुल्लाह (14) भी कुछ खास नहीं कर सके। वहीं, अंतरराष्ट्रीय डेब्यू करने वाले कुलदीप सेन ने 39वें ओवर में दो विकेट झटके। उन्होंने अफीफ हुसैन को सिराज के हाथों कैच कराया। फिर इबादत हुसैन हिट विकेट हो गए।

जाह्नवी कपूर ने अंग्रेजी गाना पर किया डांस

मुंबई। जाह्नवी कपूर इन दिनों अपनी आने वाली फिल्म मिस्टर एंड मिसेज माही की तैयारियों में व्यस्त हैं। इस फिल्म में वह एक महिला क्रिकेटर की भूमिका में नजरआयेंगी फिल्म मिस्टर एंड मिसेज माही में जाह्नवी के साथ राजकुमार राव भी अहम भूमिका में दिखाई देंगे। बॉलीवुड एक्ट्रेस जाह्नवी कपूर इन दिनों बैक-टू-बैक अपने आगामी प्रोजेक्ट्स की शूटिंग में बिजी हैं। हालांकि वो अपने बिजी शेड्यूल में भी वक्त निकाल कर अपने अपने चाहने वालों का मनोरंजन करना नहीं भूलतीं। अब उनका एक वीडियो सामने आया है, जिसमें वो एक अंग्रेजी गाने पर थिरकती हुई दिख रही है। इस वायरल वीडियो को जाह्नवी कपूर ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम हैंडल पर शेयर किया है, जिसमें वो हाल ही में रिलीज हुए टेलर स्विफ्ट के सॉन्ग कर्म पर अपने हेयर स्टाइलिस्ट मार्स पेड्रोजो के साथ थिरकती हुई दिख रही हैं। इस दौरान उन्होंने व्हाइट टॉप के साथ डेनिम का शॉर्ट्स कैरी किया हुआ है, जो उनके लुक को और भी खूबसूरत बना रहा है और इस वीडियो को शेयर कर उन्होंने एक खास कैप्शन भी लिखा है।

मिस्टर एंड मिसेज माही की तैयारियां शुरू

हाल ही में उन्होंने इंस्टाग्राम एक तस्वीर साझा की थी, जिसको देखकर मालूम होता है कि वो इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म मिस्टर एंड मिसेज माही की तैयारियों में जुटी हुई हैं। तस्वीर में देखा जा सकता है कि एक्ट्रेस अपने हाथों में बैट लिए क्रिकेट खेल रही हैं और इस दौरान उनके हाथों में कई बैंडेस लगे हुए भी दिख रहे हैं।

जाह्नवी कपूर की आने वाली फिल्में

बात अगर जाह्नवी कपूर के वर्कफ्रंट की करें तो वो इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म मिस्टर एंड मिसेज माही की तैयारियों में जुटी हुई हैं। इस फिल्म में वो एक महिला क्रिकेटर की भूमिका में नजर आने वाले हैं, फिल्म मिस्टर एंड मिसेज माही में जाह्नवी के साथ अभिनेता राजकुमार राव भी अहम भूमिका में दिखाई देंगे। इसके अलावा एक्ट्रेस नितेश के निर्देशन में बन रही फिल्म बवाल में अभिनेता वरुण धवन के साथ नजर आने वाली है। जाह्नवी कपूर को आखिरी बार माथुकुट्टी जेवियर के निर्देशन में बनी फिल्म मिली में देखा गया था। सस्पेंस और थ्रिलर से भरी इस फिल्म जाह्नवी कपूर ने मुख्य मिली नाम की लड़की का किरदार निभाया है, जबकि मनोज पाहवा उनके पिता की भूमिका निभाई है। मिली की कहानी पिता-बेटी की जोड़ी पर आधारित है, जो मुश्किल भरी सिचुएशन से बाहर आने के लिए संघर्ष करते नजर आ रहे हैं। जानकारी के अनुसार मिली सर्वाइवल ड्रामा फिल्म है जो मलयालम फिल्म हेलेन का हिंदी रीमेक है। जाह्नवी कपूर के लुक्स से लेकर उनकी एक्टिंग स्किल्स तक, फैंस अक्सर उन्हें उनकी मां श्रीदेवी से कंपेयर करते रहते हैं।

हिन्दी का राष्ट्रीय राजनैतिक साप्ताहिक
राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
प्रचार है तो व्यापार है,
अपने व्यवसाय, राजनीति से जुड़ी
वार /त्यौहार/ जयंती/ पुण्यतिथि/ चुनावी अभियान का विज्ञापन
अब देश के लोकप्रिय हिंदी अखबार
एवं डिजिटल न्यूज़ पोर्टल
'राजनीतिक तरकस'
में दें।

जुड़े अपनों के साथ ऑनलाइन बुकिंग की अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
Email:tarkasnews@gmail.com Mob:9990170069
Website: www.ajneetiktarkas.in